

не е было намѣреніе то ни да напишемъ една  
голѣмѣк книга.

“Πῶς γὰρ οὐκ ἀτοπον ὑπὲρ μὲν χρημάτων μὴ ἔτε-  
ροις πιστεύειν, ἀλλ’ ἀριθμῷ καὶ ψήφῳ τοῦτο ἐπιτρέπειν,  
ὑπὲρ δὲ πραγμάτων ψηφιζομένους, ἀπλῶς ταῖς ἔτερων πα-  
ρατύρεσθαι δόξαις, καὶ ταῦτα ἀχρ. βῆ ζυγὸν ἀπάντων ἔχον-  
τας, καὶ γνώμονα, καὶ κανόνα, τῶν Θείων νόμων τὴν ἀπό-  
φασιν; Διὸ παρακαλῶ καὶ δέομαι πάντων ὑμῶν ἀφέντες  
τί τῷ δεῖνι καὶ τῷ δεῖνι δοκεῖ περὶ τούτων, παρὰ τῶν  
γραφῶν ταῦτα ἀπαντα πυνθάνετε.” (1)

“Ακούσατε, παρακαλῶ, πάντες οἱ βιωτικοὶ, καὶ κτᾶσθε  
βιβλία φάρμακα τῆς ψυχῆς· εἰ μηδὲν ἔτερον βούλεσθε τὴν  
γούν καινὴν κτᾶσθε.” (2)

“Беспрѣятно е, когато въ работы относителни  
до пары, не ся увѣрявамы на други, но прѣдпо-  
читамы да гы смѣтамы сами, заради по-важны  
работы покорно да слѣдвамы мнѣнія-та на дру-  
гы, особито като имамы пай-точно-то правило, и  
законъ, и показатель: сир. изявленіе-то на Бо-  
жественны-тѣ законы.”

“Слушайте, молїж вы, всички свѣтовни че-  
ловѣца! добывайте си Библіи които сѫ цѣрове  
на душж-тѣ — ако друго не щете, поне добы-  
вайте си Новия Завѣтъ.”

Сега, читатели мои, вый сте чули отговора  
който църква-ла ми е дала върху тойзи въпросъ.  
Чули сте мнѣнія-та на пророцы-тѣ, на апостолы-  
тѣ, на отцы-тѣ и на Господа нашего Іисуса Хри-

(1) Йоанинъ Златоустъ, Бесѣда 13, гл. 4.

(2) Сѫщій, Бесѣда 9, гл. 3.